IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 10, Issue 1, October 2020
Impact Factor: 4.819

"श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित नैतिक मूल्य"

डॉ. कीर्ति शुक्ला

असिस्टेंट प्रोफेसर- संस्कृत

राजकीय महाविद्यालय, मानिकपुर, जनपद- चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

नैतिक का शाब्दिक अर्थ है 'नीति संबंधी'। सामान्य रूप से नैतिकता नीति के वृहत्तम अर्थो जिसका उद्देश्य मानवीय चरित्र का निर्माण करना होता है अतः नैतिकता को सामान्यतया चरित्र और आचरण के परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है जब मूल्य की बात होती है तो हम कहते हैं की सच्चाई, ईमानदारी, वफादारी माता-पिता का आदर आदेश के अंतर्गत आते हैं। नैतिक मूल्य मानवीय मूल्य है जो व्यक्ति के विवेक बुद्धि पर आश्रित होते हैं तथा जिनके माध्यम से व्यक्ति कर्तव्य-अकर्तव्य का भली-भांति परीक्षण करके लोक कल्याणार्थ कार्य करता है ।इसी के आलोक में श्रीमद् भागवत गीता के कुछ प्रतिपादित, कुछ नैतिक मूल्य जैसे सत्य ,अहिंसा, अस्तेय ,दान ,तप, क्षमा तितिक्षा आदि पर प्रकाश डालते हुए यह ज्ञात होता है कि सृष्टि काल से लेकर आज तक मनुष्य विकास की उच्चतर एवं उदात्ततर पद की पराकाष्ठा को प्राप्त करता चला आ रहा है। इसके मूल में अनेकानेक कर्म को चिन्हित किया जा सकता है किंतु उनमें धर्म को मूल तत्व माना जा सकता है जिसमें नैतिक मूल्यादि आचार शास्त्रीय तत्वों का समायोजन किया गया है। श्रीमद् भागवत गीता भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों की उन्नति हेतु एक आदर्श ग्रंथ है। यह किसी जाति वर्ग अथवा संप्रदाय का ग्रंथ ना होकर मानव मात्र के अभ्युदय का साधन है इसमें निहित नैतिक मूल्यों का पालन करने सामाजिक सद्भाव बनाने में पूर्ण सहायता मिलेगी।